HCL-009-001303 Seat No. _____

Second Year B. R. S. (Sem. III) (CBCS) Examination

October – 2017

Hindi Foundation-2 : FND-322

(New Course)

Faculty Code : 009
Subject Code : 001303

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : सूचनानुसार उत्तर दीजिए ।

१ निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए : १५

(१) 'प्रतिशोध' एकांकी में कवि भारवि के द्वारा आज के युवानों को क्या सीख दी है – कथावस्तु लिखे ।

अथवा

(१) पर्दे के पीछे एकांकी की कथावस्तु लिखे ।

२ निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** का उत्तर दीजिए : १५

(१) ''रीढ़ की हड्डी'' सामाजिक विषमता को चित्रित करने वाला एकांकी है । – कथावस्तु लिखकर साबित कीजिए ।

अथवा

(१) ''स्ट्राईक एकांकी की कथावस्तु लिखकर दाम्पत्यजीवन की विषमता का चित्रण कीजिए ।''

३ निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के सूचनानुसार उत्तर दीजिए : १५

(१) हाँ, मैंने बी.ए. पास किया है, कोई पाप नहीं किया ..... चोरी नहीं की, आप के लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी है या नहीं, जाँच कीजिए – संदर्भ को समझाईए ।

(२) ''और वह जा न सकी'' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए वह कहाँ तक योग्य है ?

(३) यह प्रेम का ताप है – जीतना बढ़ता है, सौंदर्य उतना ही निखरता है । कविता ऊतनी ही प्रखर होती है, और उन्माद ऊतना ही मादक होता है ? – संदर्भ को समझाईए ।

(४) मनुष्यों के लिए तो लोगों ने अस्पताल खोल ही रखे हैं । इन बेचारे मूंगे पशु–पक्षियों का क्या ? – संदर्भ देकर समझाईए ।

(५) अनुशासन की मर्यादा पर बड़े से बड़े व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है ? – संदर्भ देकर समझाईए ।

४ निम्नांकित प्रश्नों का सूचनानुसार उत्तर दीजिए : १५

(१) ''प्रतिशोध'' एकांकी में से श्रीधर की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए ।

अथवा

(२) ''रीढ़ की हड्डी'' में से पात्र गोपाल प्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए ।

५ निम्नांकित प्रश्नों का सूचनानुसार उत्तर दीजिए : १०

(१) जैन स्वीट मार्ट को माल में दोष होने का शिकायती पत्र लिखे ।

अथवा

(२) निम्नलिखित परिच्छेद का हिंदी भाषा में ही सारलेखन लिखिए :

भारत का पर्वतीय सौंदर्य अलौकिक है । उत्तर दिशा में दूर–दूर तक पर्वत श्रृंखलाएँ फैली हुई है । उनकी गगनचुम्बी चोटियों पर बादल मंडराते रहते हैं तथा बर्फे गिरती रहती है । विविध मौसम गर्मी, शरद, वर्षा एक ही साथ चलते रहते हैं । झरझर झरने प्रवाहित होते रहते हैं । नदियों के उद्‌गम स्रोतों की कल–कल ध्वनि गुंजती रहती है । विभिन्न उपयोगी जड़ी बुटियाँ इस क्षेत्र में उपलब्ध है । उनके जीव जन्तु इन पर निवास करते हैं । ऋषि–मुनि वहीं पर एकान्त साधना में मग्न रहते हैं । इधर–उधर उगी हुई घास तथा देवदारु आदि के लम्बे लम्बे वृक्ष – इस प्रदेश में हरीतिमा व्याप्त करते हैं । प्रातः एवं सायंकाल सूर्य, पर्वत, श्रृंगो पर स्वर्णिम, गुलाबी, लाल, रंग विकीर्ण कर प्रकृति सुंदरी को सजाता है । रात्रि में चन्द्रमा अपनी शुभ, शीतल तथा मनोहारिणी चांदनी से प्रकृति नारी के वन को श्रृंगारित करता है । ओस की बुंदे उसे विविध अलंकार पहनाती है । यह सब देखकर ऐसा लगता है मानो इस रूप में इश्वरने अपनी सुरुचि का परिचय दिया है ।